प्रभात खबर
रविवार, 20.11.2022

बाल साहित्य का विस्तृत होता संसार

साहित्य

डॉ दर्शनी प्रिय
टिप्पणीकार

पिछले दिनों दिल्ली साहित्य अकादमी में कुछ कलमकारों ने अपने मन की पोटली खोली. अलग-अलग प्रांतों की खुशबू लिये बाल साहित्यकार जब एक मंच पर एकत्रित हुए, तो बाल सुलभ भावनाएं उत्स पर दिखीं.

बाल मन की सुकोमल भावनाओं को सहजता से संचित करते साहित्यकारों का जमावड़ा इस बात की बानगी है कि रचनाकर्म में लीन साहित्यकारों की नजर में बच्चे उपेक्षित नहीं. उनके लिए भी कुछ और श्रेष्ठ रचा जा रहा है. मनोहर पोथी से लेकर नंदन, चंपक और चंदा मामा जैसे साहित्यिक सिलसिले को आगे बढ़ाने का काम जारी है. पिछले दिनों दिल्ली साहित्य अकादमी में कुछ कलमकारों ने अपने मन की पोटली खोली. अलग-अलग प्रांतों की खुशबू लिये बाल साहित्यकार जब एक मंच पर एकत्रित हुए, तो बाल सुलभ भावनाएं उत्स पर दिखीं. मौका था राष्ट्रीय बाल साहित्य पुरस्कार प्रदान करने का. केवल भारत ही नहीं, नेपाल और भूटान जैसे पड़ोसी देशों के लेखकों का जुटान इस बात की तस्दीक कर रहा था कि साहित्याकार देश व काल की सीमाओं से परे सृजनकर्ता की भूमिका में अपना किरदार निभा रहे होते है. उनके प्रयासों ने भविष्य की संवेदनशील पीढ़ी तैयार की है. बाल मन की क्यारियों में संवेदना, करुणा, दया, क्षमा और प्रेम के फूल खिलाने वाले इन लेखकों ने बड़ा काम किया है. इन्हीं में से एक है मराठी बाल साहित्यकार सुनिता बर्वे, जो दो दशकों से अधिक समय से बाल साहित्य रचने में जुटी हुई हैं. मराठी बाल साहित्य में इनकी श्रेष्ठ बाल कहानियों की खूब स्थान मिला है. हुर्रे हुप, खारुताई आणि सावलीबाई, भोपकयाची बी, झाडआजोबा, पियूची वही, उजेडबाबा गांव, गंमत झाली भारी, नल-दमयंती और रानफुले जैसी इनकी अनेक कृतियां ख्यात रही हैं. चौथी कक्षा से शुरु हुआ उनका यह सफर, जब उन्होंने संत ज्ञानेश्वर पर अपनी पहली कविता लिखी और शिक्षिकाओं ने खूब सराहा, आज तक जारी है. वर्ष 1997 में इनका पहला बाल कविता संग्रह मृगतृष्णा प्रकाशित हुआ. बाद में कविता, कहानी और बच्चों के नाटक के लेखन के साथ इनकी कलम की धार तेज होती रही. इनकी बाल कविताओं को राज्य के स्कूली किताबों में भी स्थान मिला. उनके पीयूची वही उपन्यास को साहित्य

अकादमी का बाल साहित्य सम्मान प्राप्त हुआ है.

बच्चों के लिए साहित्य क्यों जरूरी है, इस पर वे कहती हैं कि बच्चे इसके जरिये अपनी भाषा का आनंद ले रहे हैं, अपनी भाषा में गुनगुना रहे हैं, इससे उनका मन आनंदित हो रहा है. साथ ही, यह उन्हें संवेदनशील और प्रकृति प्रेमी बना रहा है. बाल साहित्य केवल बाल पाठकों का मनोरंजन ही नहीं करता, अपितु उन्हें जीवन के सच से परिचित भी कराता है. बच्चे जैसा पढ़ेंगे, उसी के अनुरूप उनका चरित्र निर्माण होगा. शिक्षाप्रद कहानियों से उनमें जीवन के संघर्षों से जूझने की ताकत आती है. साहित्य से उनके निर्मल मन में संस्कार, समर्पण, सद्भावना और संस्कृति के बीज बोये जा सकते हैं. बाल सम्मान की अकादमी की सूची में क्षमा शर्मा, दिगंत ओजा, जफर कमाली, मीना सुब्बा, मनोहर निहलानी, तमन्ना बोगरा और पाट्टिपाका मोहन और अशिंया सत्तार जैसे प्रसिद्ध साहित्यकारों को भी पुरस्कृत किया गया, जिन्होंने श्रम से बाल साहित्य की बगिया को सींचा है.